मुख्य बिंदु

किताब उपयोगी, शास्त्र खतरनाक

एक खलीफा सिकंदरिया पहुंचा था। और सिकंदरिया के बहुत बड़े विराट पुस्तकालय में उसने आग लगवा दी थी। उस खलीफा ने जाकर उस पुस्तकालय के अध्यक्ष को कहा था—एक हाथ में कुरान लेकर और एक हाथ में मशाल—उसने कहा था कि मैं यह पूछने आया हूं कि कुरान में जो कुछ लिखा है, तुम्हारे इस पुस्तकालय में जो किताबें हैं, क्या उनमें भी वही लिखा है जो कुरान में लिखा है? अगर वही लिखा है तो इतनी किताबों की कोई जरूरत नहीं, कुरान काफी है, कुरान पर्याप्त है। और अगर तुम यह कहो कि इन किताबों में ऐसी बातें भी लिखी हैं जो कुरान में नहीं हैं, तो मैं कहूंगा, ये किताबें खतरनाक हैं; क्योंकि सत्य सब कुरान में लिखा है, उसके अतिरिक्त जो भी है वह असत्य है। दोनों हालतों में मैं कुरान की कसम लेकर और कुरान को साक्षी रख कर इस मशाल से इस पुस्तकालय में आग लगाता हूं।

और उसने बड़े पवित्र भाव से, बड़े धार्मिक भाव से उस पुस्तकालय में आग लगा दी। वह पुस्तकालय इतना बडा था कि छह महीने तक उन किताबों में लगी हुई आग नहीं बुझाई जा सकी थी। उसके हाथ में शास्त्र था, पुस्तकालय में किताबें थीं।

शास्त्र हमेशा पुस्तकों के खिलाफ है। शास्त्र का मतलब है—कोई किताब जो पागल हो गई है या उसके मानने वाले पागल हो गए हैं। और यह दावा करने लगे हैं कि यह परम सत्य है, इसके अतिरिक्त सब असत्य है।

किताब के मैं खिलाफ नहीं हूं। जिस दिन गीता एक किताब होगी, और कुरान एक किताब होगी, और बाइबिल एक किताब होगी—वह स्वागत के योग्य होगी। लेकिन जब तक वे शास्त्र हैं, तब तक वे खतरनाक हैं। तब तक उनसे बचने की जरूरत है।

मेरे शब्दों का जो संग्रह किया जा रहा है वे किताबें हैं। उन किताबों में कोई भी शास्त्र होने का दावा नहीं है। और न उन किताबों का यह दावा है कि जो मैं कह रहा हूं वही सत्य है। न उन किताबों का यह दावा है कि मेरी जो बात मान लेगा वह मोक्ष चला जाएगा और स्वर्ग का अधिकारी हो जाएगा। और जो मेरी बात नहीं मानेगा उसे नरक में सड़ना पड़ेगा।

नहीं, उन किताबों में यह कोई दावा नहीं है। वे किताबें विनम्र निवेदन हैं इस बात की कि मुझे जो दिखाई पड़ता है वह मैं कह रहा हूं, ताकि मैं आपको साझीदार बना सकूं। अनुयायी नहीं! शास्त्र अनुयायी बनाता है; किताबें केवल साझीदार बनाती हैं—शेयरिंग। किताब सिर्फ शेयर करना चाहती है। शास्त्र अनुयायी बनाना चाहता है। शास्त्र कहता है : मेरे पीछे आओ! किताब कहती है कि मेरी सुन लो, इतनी ही तुम्हारी बड़ी कृपा है। पीछे आने का कोई सवाल नहीं है।

तो एक बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि मैं जो कह रहा हूं वह शास्त्र नहीं है, न जो लिखा जा रहा है वह शास्त्र है। और सच तो यह है कि बुद्ध ने जो कहा था वह भी शास्त्र नहीं था, महावीर ने जो कहा था वह भी शास्त्र नहीं था, कृष्ण ने जो कहा था वह भी शास्त्र नहीं था। वह सब अपने मित्रों के साथ अपने अनुभव में साझीदार, अपने अनुभव में साथी बनाने का प्रयास था।

लेकिन उन किताबों के आसपास झुंड खड़ा हो गया भीड़ का। अनुयायी खड़े हो गए। और उन्होंने दावे करने शुरू किए कि हमारी जो किताब है वह साधारण किताब नहीं है, वह शास्त्र है। दूसरी सब किताबें हैं; हमारी किताब शास्त्र है। दूसरी सब आदमियों की लिखी हुई किताबें हैं; हमारी किताब स्वयं परमात्मा का लिखा हुआ शास्त्र है। हमारी किताब स्वर्ग से उतरा हुआ संदेश

है। हमारी किताब ईश्वर के द्वारा भेजे गए पैगंबर की किताब है, मैसेंजर की। हमारे वेद स्वयं परमात्मा के हाथ से लिखे गए हैं, मनुष्य के हाथों से नहीं। वे अपौरुषेय हैं। जब इस तरह के गलत दावें खड़े हो जाते हैं, तो किताब शास्त्र हो जाती है।

जैसे आदमी पागल हो जाता है, ऐसे ही किताबें भी पागल हो जाती हैं। और जब पागल हो जाती हैं तो उनको हम शास्त्र कहते हैं। शास्त्रों के मैं खिलाफ हूं, किताबों के मैं कभी खिलाफ नहीं। दुनिया में किताबें जितनी बढ़ें उतना अच्छा है, शास्त्र जितने कम हो जाएं उतना अच्छा है। गीता बहुत अदभुत किताब है, बहुत प्यारी है। लेकिन जैसे ही वह शास्त्र हो जाती है, विषाक्त हो जाती है, पायज़नस हो जाती है। किताब रह कर वह सिर्फ कृष्ण के अनुभव की अभिव्यक्ति है। और वह आपको निमंत्रण देती है कि मुझे सुनो, मेरी बात सुन लो, तो आपकी कृपा है। सोच लो मेरी बात, आपका बड़ा अनुग्रह है। मेरी बात पर विचार कर लो और अगर कुछ ठीक लगे—ठीक तुम्हें लगे, तुम्हारी बुद्धि को, तुम्हारे विवेक को—तो ठीक लगते ही वह किताब की बात नहीं रह गई, वह आपकी अपनी बात हो गई।

मैं जो कह रहा हूं, अगर उसमें से आपके तर्क और विचार और बुद्धि को कोई बात ठीक लगे, सोचने से ठीक लगे, विचारने से ठीक लगे, संदेह करने से ठीक लगे, तो फिर वह मेरी नहीं रह गई, वह आपकी हो गई। और बिना सोचे, बिना विचारे, विश्वास करने से ठीक लगे, तो वह बात मेरी है और आप अंधे आदमी हो।

शास्त्र दावा करता है कि आप अंधे हो जाओ। शास्त्र कहता है : मुझ पर विश्वास मत करना। क्योंकि जो ईश्वर के वचन हैं उस पर मनुष्य विचार कैसे कर सकता है? आदमी की अदालत में और ईश्वर को खड़ा किया जा सकता है? आदमी की बुद्धि की कसौटी पर और परमात्मा के वचन नापे जा सकते हैं? नहीं, यह असंभव है। शास्त्र पर विचार नहीं किया जा सकता, शास्त्र पर सिर्फ विश्वास किया जा सकता है। उस किताब को मैं शास्त्र कहता हूं, जो कहती है : विश्वास करो, विचार नहीं। जो कहती है : अनुसरण करो, अनुकरण करो, अनुयायी बनो; जो कहा है वह परम सत्य है, वह सर्वज्ञ की वाणी है, वह तीर्थंकर का वचन है; उस वचन में कभी भी भूल नहीं हो सकती।

ये जो दावे हैं, ये दावे अगर किसी दिन मेरी किताबें करें, तो उन सारी किताबों को इकट्ठा करके आग लगा देना। कृष्ण की किताब को आग लगाने के लिए मैं नहीं कह सकता हूं। मोहम्मद की किताब को आग लगाने को नहीं कह सकता हूं। लेकिन कम से कम अपनी किताब को आग लगाने के लिए कहने का हक मुझे है। जिस दिन मेरी कोई किताब दावा करे कि यह शास्त्र है, उस दिन उसमें एकदम आग लगा देना और भूल से उसको कहीं बचने मत देना दुनिया के किसी काने में। अगर वह रह गई तो वह खतरनाक साबित होगी और आदमी की जिंदगी को बर्बाद करेगी और नुकसान पहुंचाएगी।

— ओशो

जीवन रहस्य, प्रवचन—11

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)

उन्हीं मित्र ने एक बात और पूछी है, और उनके दोनों प्रश्नों का जवाब देना जरूरी है, क्योंकि नीचे उन्होंने लिखा है कि अगर आपने जवाब नहीं दिया तो मैं बहुत दुखी हो जाऊंगा।

उन्होंने दूसरी बात यह पूछी है कि आपके चित्र भी बिकते हैं ओर लोग आपके चित्र भी अपने घरों में लगाते हैं। और आप तो मूर्ति के विरोध में हैं!

मैं मूर्ति के विरोध में हूं, और चित्र के विरोध में कभी भी नहीं हूं। मूर्ति और चित्र में भी वही फर्क है जो किताब और शास्त्र में फर्क है। मैंने कभी नहीं कहा कि राम के चित्र को अपने घर में मत लगाना। मैंने कभी नहीं कहा कि महावीर के चित्र को अपने घर में मत लगा लेना। मैंने यह भी नहीं कहा कि महावीर की पत्थर की प्रतिमा अपने घर में मत रख लेना। महावीर जैसे प्यारे आदमी की स्मृति घर में रखी जा सकती है। बुद्ध जैसे प्यारे आदमी की स्मृति जिस घर में नहीं है वह घर अधूरा है। और जीसस का सूली पर लटका हुआ चित्र जिस घर के भीतर नहीं है, उस घर के बच्चों को पता नहीं कि कितने अदभुत लोग जमीन पर हो चुके हैं।

लेकिन पूजा मत करना। प्रेम करना; पूजा नहीं। क्योंकि पूजा दूसरा ही अर्थ रखती है। पूजा यह कहती है कि इस पत्थर की मूर्ति के सामने हाथ जोड़ने से मुझे मुक्ति मिल सकती है। यह बेवकूफी की शुरुआत हो गई। किसी मूर्ति के और किसी चित्र के सामने बैठने से मुक्ति नहीं मिल सकती। और कोई मूर्ति और कोई चित्र भगवान तक पहुंचने का रास्ता नहीं बन सकता। कोई मूर्ति भगवान नहीं है। मूर्ति और चित्र उन प्यारे लोगों की स्मृतियां हैं जो जमीन पर हो चुके हैं। और उनकी स्मृति न रखी जाए, यह मैंने कभी भी नहीं कहा है।

मैं मूर्तियों के मंदिर बनाने के खिलाफ हूं। लेकिन घर-घर में मूर्तियां हों, इसके पक्ष में हूं। एक-एक घर में मूर्तियां हो। लेकिन